त्यक्त्वा =त्याग कर; **कर्मफलासंगम्** =कर्मफल की आसक्ति को; **नित्य** = सदा; **तृप्तः** =तृप्त; **निराश्रयः** =आश्रयरहित; **कर्मणि** =कर्म में; **अभिप्रवृत्तः** =पूर्ण तत्पर होने पर; **अपि** =भी; **न** =नहीं; **एव** =निःसन्देह; **किंचित्** =कुछ भी; **करोति** =करता है; **सः** =वह।

अनुवाद

कर्मफल की आसक्ति को सम्पूर्ण रूप से त्यागकर नित्यतृप्त और स्वतन्त्र पुरुष सब कर्म करतां हुआ भी कभी कोई सकाम कर्म नहीं करता।।२०।।

तात्पर्य

कर्मबन्धन से इस प्रकार की मुक्ति एकमात्र कृष्णभावनाभावित होकर श्रीकृष्ण की प्रीति के लिए सब कर्म करने से ही हो सकती है। कृष्णभावनाभावित भक्त विशुद्ध भगवत्प्रेम से प्रेरित होकर कर्म करता है। इसलिए उसके लिए कर्मफल में कुछ भी आकर्षण नहीं रहता। वह पूर्णतया कृष्णाश्रित हो जाता है, इसलिए अपने परिपोषण तक में आसक्त नहीं रहता और न ही उसे अपने योगक्षेम की चिन्ता रहती। पूर्ण सामर्थ्य से स्वधर्म का आचरण करता हुआ भी वह सर्वतोभावेन कृष्णचरणाश्रित रहता है। इस कोटि का अनासक्त पुरुष शुभ-अशुभ कर्मफल से नित्य मुक्त है, जैसे वह कभी कुछ करता ही न हो। यह 'अकर्म' अर्थात् निष्काम कर्म का लक्षण है। कृष्णभावना से रहित अन्य सब कर्म बन्धनकारी हैं, और जैसा पूर्व में कहा जा चुका है, उन्हीं का नाम विकर्म है।

निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः।
शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम्।।२१।।

निराशी =फल की कामना से रहित; **यत** =वश में किए हुए; **चित्तात्मा** =मन तथा बुद्धि से युक्त; **त्यक्त** =त्याग दिया है; **सर्व** =सम्पूर्ण; **परिग्रहः** =सामग्री पर स्वामीपन का भाव; **शारीरम्** =प्राणरक्षा का; **केवलम्** =मात्र; **कर्म** =कर्म; **कुर्वन्** =करते हुए भी; **न** =नहीं; **आप्नोति** =प्राप्त होता; **किल्बिषम्** =पाप को।

अनुवाद

ऐसा ज्ञानी पुरुष, जिसने मन-बुद्धि को पूर्ण रूप से वश में करके और अपनी सम्पूर्ण सामग्री में स्वामीपन के भाव को त्याग दिया है, केवल शरीरधारण के लिए कर्म करता हुआ भी पाप को प्राप्त नहीं होता।।२१।।

तात्पर्य

कृष्णभावनाभावित पुरुष को अपने कर्मों से शुभ-अशुभ किसी भी फल की अपेक्षा नहीं होती। उसके चित्त एवं बुद्धि पूर्णतया वश में रहते हैं। वह जानता है कि वह परमेश्वर का भिन्न-अंश है, इसलिए अंशी के अंश के रूप में उसकी भूमिका का निर्णय श्रीभगवान् ने किया है, उसने स्वयं नहीं। जीव तो भगवत्-इच्छा की पूर्ति में निमित्तमात्र है; जैसे हाथ स्वेच्छापूर्वक नहीं, बल्कि सम्पूर्ण देह के प्रयत्न से चेष्टा